संत रविदास जयंती: उच्चता और विनम्रता

Sant Ravidas Jayanti: संतों और गुरुओं ने एक ओर स्वयं को सत्य, आत्मा से अविभाज्य बताया है। वहीं दूसरी ओर, उन्होंने स्वयं को अज्ञानी, मूढ़, अधीर, दुर्भाग्यशाली और तुच्छ भी कहा है।

By: Acharya Prashant
• UPDATED : February 12, 2025, 1:34 pm

“प्रभु जी तुम चंदन हम पानी। जाकी अंग–अंग बास समानी॥
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा॥

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा॥

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा॥”

“मेरी संगति पोच सोच दिन राती।
मेरा कर्मु कुटिलता जन्मु कुंभांती॥“

~ संत रविदास

क्या यह अजीब नहीं है? संतों और गुरुओं ने एक ओर स्वयं को सत्य, आत्मा से अविभाज्य बताया है। वहीं दूसरी ओर, उन्होंने स्वयं को अज्ञानी, मूढ़, अधीर, दुर्भाग्यशाली और तुच्छ भी कहा है। अब, उनके जीवन इतने पवित्र हैं कि उनके जैसा भाग्यशाली, श्रेष्ठ और ज्ञानी कोई दूसरा नहीं, फिर भी वे स्वयं को इस तरह से क्यों संबोधित करते हैं? ऐसा क्यों?

वे संत हैं, इसलिए। वे जानते हैं कि मनुष्य दो स्तरों पर जीता है—एक ओर, मनुष्य वह पवित्र उत्कंठा है जो परम में विलीन होने के लिए छटपटाती है। दूसरी ओर, वह केवल शरीर और मन की पूर्ववर्ती वृत्तियों से बंधा हुआ एक पूरी तरह से संस्कारित जीव है। संत स्पष्ट रूप से इस शरीर और मन की संरचना को देख लेते हैं, और पूरी ईमानदारी से स्वीकार करते हैं कि शरीर के स्तर पर, सभी निम्न ही हैं।

जब संत रविदास यह कहते हैं कि वे तथाकथित छोटी जाति में जन्मे हैं, तो वे वास्तव में अपनी जाति की बात नहीं कर रहे होते। संत किसी भी जाति और वर्ग की सीमाओं से परे होते हैं। वे जन्म से मिले शरीर को अपनी सच्चाई नहीं मानते। जब वे जन्म को तुच्छ कहते हैं, तो वे समस्त मानवजाति की शारीरिक स्थिति का वर्णन कर रहे होते हैं। वे यह कह रहे हैं कि केवल वही व्यक्ति, जो शरीर की पुरानी आदतों में फंसे रहने की प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से देख पाता है, उससे मुक्त हो सकता है। जो अपने ज्ञान पर अभिमान करता है, जो अपनी बुद्धिमत्ता से भरा हुआ है, वह सत्य की ओर बढ़ ही नहीं सकता। वहीं, जो विनम्र है, जो सबसे निचले स्थान पर बैठने को तैयार है, जो कतार में सबसे अंत में खड़े होने को तैयार है, वही वहाँ तक पहुँच सकता है।

विनम्रता संतत्व की पहचान है। यह अपनी कमजोरियों को स्वीकार करने की ईमानदारी से आती है। लेकिन आम आदमी अपनी कमजोरियों को स्वीकार करने से डरता है। यह उलटी और हास्यास्पद स्थिति है। सामान्य व्यक्ति यह दिखाने का प्रयास करता है कि वह पूर्णतः समर्पित, श्रद्धालु, भक्ति में लीन और सत्य के प्रति

समर्पित है। जबकि सच्चाई यह है कि वह सत्य से सबसे अधिक दूर होता है। उसका जीवन ही इस विरोध का प्रमाण है—एक ऐसा जीवन जो सीमाओं, भय, लालच और विवशताओं से घिरा हुआ है। जो वास्तव में सत्य का विरोधी होता है, वही सबसे ऊँची आवाज़ में घोषणा करता है—अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी—कि वह परम भक्त है, पूरी तरह समर्पित है।

इसके विपरीत, जो वास्तव में समर्पित होता है, वह स्पष्ट रूप से देखता है कि उसके भीतर कितनी शक्तियाँ—उसके अपने ही शरीर और मन के रूप में—सत्य के विरोध में खड़ी हैं। उसकी प्रत्येक रक्त की बूंद, उसकी प्रत्येक विचार-लहर, छोटी-बड़ी सभी गतिविधियाँ सत्य के विरुद्ध प्रवाहित हो रही हैं। इसलिए, वह हमेशा ज़मीन से जुड़ा रहता है—अपनी कमजोरियों और सीमाओं के प्रति पूरी तरह सचेत।

शरीर को देखिए। हम सहज ही शरीर के एकाधिपत्य में विश्वास कर लेते हैं: रक्त कह रहा है, मांस कह रहा है, मन कह रहा है—'मैं हूँ! केवल मैं ही हूँ। मेरे अलावा कोई सत्य नहीं!' और विचार कह रहे हैं, भावनाएँ कह रही हैं—'हम हैं! हमारे अलावा कोई सत्य नहीं!'

केवल संत ही यह देख सकता है कि यह जीव पैदा होता है और उसे अपने अस्तित्व की सच्चाई पर पूरा विश्वास होता है। जीव के लिए सत्य यही है—उसका शरीर, उसका संसार। और यदि यही सत्य है, तो फिर किसी अन्य सत्य की आवश्यकता ही क्यों?

इसीलिए संत दोनों तरह से बोलता है—और ये दोनों दृष्टिकोण एक-दूसरे के विरोधाभासी लग सकते हैं, लेकिन वास्तव में हैं नहीं। संत अत्यधिक प्रेम और उत्कटता के साथ अपनी परम सत्ता के साथ एकता को व्यक्त करता है। साथ ही, वह उतनी ही निर्ममता के साथ शरीर की तुच्छ वृत्तियों को स्वीकार करता है। संत रविदास के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम समझ पाएँ कि सत्य की स्वीकृति हमेशा असत्य के निषेध के साथ आएगी। सत्य प्रकाश है, और प्रकाश का कार्य है जिस पर वह पड़ता है, उसकी वास्तविकता को उजागर करना।

कोई भी आध्यात्मिक प्रगति तब तक संभव नहीं है जब तक व्यक्ति अपनी झूठी धारणाओं और सीमाओं को ईमानदारी से स्वीकार न कर ले। जो यह दावा करते हैं कि वे पहले से ही पूर्ण हैं, वे आध्यात्मिक पथ पर कभी आगे नहीं बढ़ सकते। आंतरिक प्रगति केवल उनके लिए है जो यह स्वीकार करते हैं कि मनुष्य जैसा जन्मता है, जीता है और मरता है, उसमें बहुत कुछ गलत है।

(आचार्य प्रशांत एक वेदांत मर्मज्ञ, दार्शनिक, समाज सुधारक, स्तंभकार और राष्ट्रीय स्तर पर बेस्टसेलिंग लेखक हैं। 150 से अधिक पुस्तकों के लेखक होने के अलावा, वे यूट्यूब पर 54 मिलियन सब्सक्राइबर्स के साथ दुनिया के सबसे अधिक फॉलो किए जाने वाले आध्यात्मिक शिक्षक भी हैं। वे आईआईटी-दिल्ली और आईआईएम-अहमदाबाद के पूर्व छात्र और एक पूर्व सिविल सेवा अधिकारी भी हैं।)